आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 3 नवम्बर, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

ग्रामीण बेरोजगारी व कुपोषण मिटाने में उपयोगी बैकयार्ड मुर्गीपालन

राजस्थान राज्य में ग्रामीण आर्थिकी का मुख्य घटक कृषि व पशुपालन है। राजस्थान में पशुपालन व कृषि जीविकोपार्जन का आधार है, साथ ही यह रोजगार व आय प्राप्ति का एक सहज व सुदृढ़ स्त्रोत भी है। राज्य के मरूस्थलीय व पर्वतीय क्षेत्रों में भौगोलिक व प्राकृतिक परिस्थितियों का सामना करने के लिए एकमात्र विकल्प पशुपालन ही है। राज्य में एक ओर वर्षाभाव के कारण कृषि से जीविकोपार्जन करना कठिन है वहीं दूसरी ओर औद्योगिक रोजगार के अवसर भी नगण्य है, इन कारणों से राज्य में बेरोजगारी, कुपोषण जैसी समस्याएं व्याप्त हैं। कुपोषण राजस्थान की ही नहीं बल्कि देश की एक गंभीर समस्या है। नेशनल फैमिली हैल्थ सर्वे–4 के अनुसार प्रदेश में 38.40 प्रतिशत बच्चों का वजन औसत से कम है, 23.40 प्रतिशत बच्चे शारीरिक रूप से कमजोर, 8.70 प्रतिशत बच्चे अति–कमजोर और 40.80 प्रतिशत बच्चे अविकसित है। इसके अलावा व्यस्क महिलाएं तथा पुरूष भी कुपोषण से ग्रसित है। गरीबी व पौष्टिक भोजन के प्रति जागरूकता की कमी कुपोषण का प्रमुख कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुपोषण को दूर करने के लिए पारंपरिक मुर्गीपालन एक उत्तम व्यवसाय है। प्रायः 10–20 मुर्गियों का छोटा–सा समूह एक परिवार के द्वारा पाला जा सकता है। इस प्रकार ग्रामीण परिवारों को उच्च गुणवत्ता का प्रोटीन स्त्रोत भी उपलब्ध हो जाता है। मुर्गीपालन इकाइयों की स्थापना से घर पर ही अण्डा व मांस से पोषक उत्पाद प्राप्त हो सकते हैं जिससे ग्रामीण परिवारों के पोषण में सुधार होगा। वर्तमान बाजार परिदृश्य में कुक्कुट उत्पाद जैविकीय मूल्य के प्राणी प्रोटीन का सबसे सस्ता उत्पाद है इसके अतिरिक्त मांस व अण्डे बेचकर अतिरिक्त आय भी ले सकते हैं। आज अण्डा व मुर्गी का मांस लोगों का महत्वपूर्ण आहार बन चुका है। यह व्यवसाय कम लागत में शुरू होने वाला व्यवसाय है तथा इसमें मुनाफा भी ज्यादा है। अतः प्रदेश में रोजगार तलाश रहे युवा इसे रोजगार के तौर पर अपना सकते हैं साथ ही राजस्थान के गरीब ग्रामीण परिवार मुर्गीपालन व्यवसाय शुरू कर बेरोजगारी तथा कुपोषण जैसी समस्याओं से निजात पा सकते है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय के अधीन विभिन्न जिलों में स्थापित पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा मुर्गीपालन पर प्रशिक्षण आयोजित कर ग्रामीण परिवारों एवं राजस्थान के युवाओं को स्वरोजगार हेतु जागरूक कर रहे हैं। अतः ग्रामीण युवाओं को चाहिए कि इन प्रशिक्षणों का लाभ उठाकर मुर्गीपालन को अपनाएं।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

गोबर-गोमूत्र प्रशिक्षण से पशुपालको को आर्थिक फायदे के साथ-साथ गौपालन के प्रति बढेगा रूझान : डॉ. नीरज के. पवन, संभागीय आयुक्त

वेटरनरी विश्वविद्यालय में गोबर–गौमूत्र के जैविक उत्पादों के प्रसंस्करण प्रशिक्षण अभियान 15 अक्टूबर को आयोजित किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय और राजस्थान गौ–सेवा परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रशिक्षण अभियान में कृषि, पशुपालन व वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रभारी अधिकारियों ने भाग लिया। इस अवसर मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त डॉ. नीरज के. पवन ने कहा कि गोबर–गौमूत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से ना केवल पशुपालकों को आर्थिक लाभ मिलेगा अपितु इस तरह के कार्यक्रमों से पशुपालकों में गौ–पालन के प्रति रूझान बढ़ेगा। बीकानेर जिले में आयोजित इन प्रशिक्षणो से पूरे राज्य के लिए एक मॉडल एवं संदेश के रूप में कार्य करेगी। ग्रामीण महिलाओं को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागी बनाएं ताकि ज्यादा से ज्यादा ग्रामिण महिलांए इस कार्य से जुड़ सके। वेटरनरी विश्वविद्यालय के हेल्पलाईन के माध्यम से प्रशिक्षण के दौरान एवं प्रशिक्षण उपरान्त पशुपालकों की समस्याओं एवं शकांओ का समाधान करें। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के गर्ग ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय के साथ–साथ कृषि व पशुपालन विभागों के संयुक्त प्रयासो से यह महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। गोबर–गौमूत्र से प्रसंस्कृत उत्पाद प्राकृतिक खेती का आधार है। इन प्रशिक्षणों से प्रशिक्षित होकर किसान भाई प्रसंस्कृत गोबर और गौमूत्र से अच्छी आय प्राप्त कर सकते है। यह न सिर्फ पर्यावरण के लिए अनुकूल होगा बल्कि किसानों की आमदनी का एक अतिरिक्त साधन होगा। उन्होंने कहा प्रशिक्षणार्थी इन प्रशिक्षणों की पूरे जज्बे के साथ सीखे एवं दूसरे पशुपालकों को भी इससे लाभान्वित करें। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने स्वागत भाषण दिया एवं गोबर–गौमूत्र प्रशिक्षण अभियान के बारे में विस्तृत जानकारी दी और बताया कि इस एक दिवसीय प्रशिक्षण में कुल 16 कृषि अधिकारी एवं 10 पशुचिकित्सा अधिकारी मास्टर ट्रेनर के रूप में प्रशिक्षण ले रहे है। उन्होंने बताया कि बीकानेर जिले के नौ ब्लाकों में कुल 47 प्रशिक्षणो को आयोजित कर कुल 1410 किसानों को इन प्रशिक्षणों से लाभान्वित किया जायेगा। इस अवसर पर अतिथियों ने गोबर–गोमूत्र प्रशिक्षण मार्गदर्शिका का विमोचन भी किया। प्रशिक्षण में एस.के.आर.ए.यू. के निदेशक अनुसंधान डॉ. पी.एस. शेखावत, प्रो. इन्द्र मोहन वर्मा, सेवानिवृत प्रोफेसर, श्री कैलाश चौधरी उपनिदेशक कृषि मुख्य वक्ता के रूप में रहे। इस कार्यक्रम के दौरान संयुक्त निदेशक कृषि डॉ. उदयभान, संयुक्त निदेशक पशुपालन डॉ. वीरेन्द्र नेत्रा, राजस्थान गौ सेवा परिषद के अध्यक्ष हेम शर्मा एवं उपाध्यक्ष अरविंद मिढ्ढा, सहित राजुवास के कुलसचिव प्रो. हेमन्त दाधीच, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. ए.पी. सिंह, परीक्षा नियंत्रक प्रो. उर्मिला पानू, निदेशक डी.पी.एम.ई. प्रो. बसन्त बेस एवं विभागाध्यक्ष मौजुद रहे।

श्वानों में फ्रेक्चर प्रबन्धन प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग द्वारा फील्ड पशुचिकित्सकों हेतु श्वानों में पिनींग एवं प्लेटिंग तकनीक द्वारा फ्रेक्चर प्रबन्धन के लिए 10 से 14 अक्टूबर तक पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के निदेशक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि यह प्रशिक्षण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अर्न्तगत आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में देश के 12 राज्यों से कुल 20 पशुचिकित्सकों ने भाग लिया। इसमें विषय विशेषज्ञों द्वारा कुल 10 व्याख्यान एवं प्रेक्टिकल प्रदर्शन किये गये। प्रशिक्षणार्थियों को श्वानों के कंकाल की आन्तरिक संरचना, विभिन्न आर्थोपेडिक उपकरणो की जानकारी, फ्रेक्चर प्रबन्धन हेतु विभिन्न तकनीके बोन प्लेटिंग, स्क्रू एवं पिनींग तकनीक आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. अनिल बिश्नोई के निर्देशन में किया गया।

आपदा मित्र योजना प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र द्वारा भारत सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण आपदा मित्र योजना के तहत प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ 31 अक्टूबर को किया गया। प्रशिक्षण का उद्घाटन उप–निंयत्रक नागरिक सुरक्षा बीकानेर की सवीना बिश्नोई एवं कर्नल हेम सिंह शेखावत द्वारा किया गया। पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के मुख्य अन्वेषक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि इस 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य आपदा मोचन बल (एस.डी.आर.एफ.) एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। प्रशिक्षण में राष्ट्रीय कैडेट कोर, राष्ट्रीय सेवा योजना, नागरिक सुरक्षा विभाग से जुड़े 40 प्रशिक्षणार्थी शामिल हैं। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. एस.के. झीरवाल, डॉ. सोहेल मोहम्मद, शैलेन्द्र सिंह शेखावत उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय का पशुजन्य रोग नियंत्रण एवं निगरानी केन्द्र, जयपुर लम्पी स्किन बीमारी जांच एंव अनुसंधान हेतु हुआ अधिकृत

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय पी.जी.आई.वी.ई. आर., जयपुर की पशुजन्य रोग नियन्त्रण एवं निगरानी केन्द्र को भारत सरकार के फिश्रीज, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय ने पशुओं में लम्पी स्किन बीमारी की जांच एवं अनुसंधान के लिए अधिकृत किया है। पशु जन्य रोग नियन्त्रण एवं निगरानी केन्द्र के मुख्य अन्वेषक प्रो. धर्म सिंह मीना ने बताया कि गत माह भारत सरकार की सदस्य टीम ने केन्द्र का दौरा किया एवं यहां स्थित जांच सुविधाओं एवं कार्यप्रणाली का अवलोकन एवं निरिक्षण किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के गर्ग ने बताया कि राज्य सरकार के सहयोग से केन्द्र को यह मान्यता मिली है इस केन्द्र द्वारा लम्बी स्किन बीमारी एवं अन्य संक्रामक बीमारियों की जांच समय पर हो जाने से रोग की संक्रामकता एवं उससे होने वाले नुकसान को कम किया जा सकेगा एवं पशुपालकों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सकेगा। इस केन्द्र के जांच अधिकृत हो जाने से ना केवल राज्य में अपितु अन्य राज्यों में भी पशुओं द्वारा फैलने वाले संक्रामक रोगो का समय पर पता लगाया जा सकेगा। विश्वविद्यालय के लिए यह उपलब्धि गौरव की बात है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत स्थापित यह केन्द्र राज्य के विभिन्न जिलों में पशुओं में फैलने वाले संक्रामक रोग के बारे में सर्वे, जांच एवं रोग की संक्रामकता के बारे में जागरूकता एवं रिपोर्टिंग के उद्देश्य से खोला गया है ताकि पशुपालकों एवं आमजन को संक्रामक रोगों से होने वाले रोगो के नुकसान से बचाया जा सके।

बीछवाल में पशु बांझपन निवारण शिविर

पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग द्वारा 19 अक्टूबर को बीछवाल में पशु बाझंपन निवारण शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. प्रमोद कुमार, प्रभारी पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग ने बताया कि इस शिविर में कुल 67 पशुओं का ईलाज किया गया जिसमें पशुओं में बांझपन, फुराव, अण्डाशय पर गांठ, गर्भनिर्धारण तथा कृत्रिम गर्भाधान शामिल है। डॉ. प्रमोद ने बताया कि इस शिविर के आयोजन में उपयोग होने वाली मेडिसिन महाराजा गंगासिंह ट्रस्ट, बीकानेर द्वारा निःशुल्क उपलब्ध करवाई गई। शिविर का आयोजन निदेशक क्लीनिक्स प्रो. प्रवीण बिश्नोई के निर्देशन में हुआ। शिविर के आयोजन में डॉ. भानु प्रकाश डांगी, डॉ. शिवेन्द्र भालोटिया एवं ग्रामवासी धन्नाराम तर्ड, सांवरमल एवं उस्मान का सहयोग रहा।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में चलाया गया स्वच्छता अभियान

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में स्वच्छता अभियान 2.0 के अतर्गत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाढ़वाला के परिसर में 31 अक्टूबर को स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रवण कुमार ने किया। इस कार्यक्रम में वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयं सेवकों द्वारा श्रमदान किया गया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा के नेतृत्व में यह अभियान चलाया गया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 3 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 10–11, 12–13 एवं 28–29 अक्टूबर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 116 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 4, 7 एवं 13 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर, 14 अक्टूबर को गांव अमरपुरा जाटान तथा 11–12 अक्टूबर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 206 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 6, 10, 12 एवं 17 अक्टूबर को गांव बल्दु, दुदोली, खोखरी एवं गुणपालिया गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 70 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 7, 12, 14, 15 एवं 27 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 96 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 10, 11 एवं 15 अक्टुबर को गांव मुकुन्दपुरा, सितारा एवं नगला करनसिंह गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 75 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 6, 7, 11, 13, 15 एवं 28 अक्टूबर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों से 156 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 7, 10, 12 एवं 28 अक्टूबर को नियामतखेडी, बृजनगर, झोपडिया तथा मण्डा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 110 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 7, 12, 15, 28 एवं 31 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा दिनांक 11 अक्टूबर को गांव खेडा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 124 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 7, 10, 13 एवं 14 अक्टूबर को गांव झीलरा, सिहोली, कुईया, महफिल का पुरा तथा सिंघोरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 148 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 10, 12, 14 एवं 15 अक्टूबर एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर तथा 29 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 183 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा 15 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 10–11 एवं 28–29 अक्टूबर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 85 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 6, 10, 11, 12 एवं 14 अक्टूबर को गांव नवलश्याम, तापरा, पीपलादा, मेताली एवं कनबा गांवों में एक दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 6, 7 एवं 10 अक्टूबर को गांव चायां, चारणवासी एवं सरदारपुरा खालसा में एक दिवसीय पशुपालक/कृषक प्रशिक्षण शिविर तथा 28–31 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 127 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

शादी-विवाह, समारोह का बचा दूषित खाना पशुओं को ना खिलाएं, एल्कोलोसिस हो सकता है।

अक्सर ऐसा देखा गया है कि लोग शादियों का व घर का बचा–खुचा दूषित खाना पालतू पशुओं को खिला देते हैं। इस प्रकार का गरिष्ठ खाना खाने से जुगाली करने वाले पशुओं में अधिक क्षार बनने से पशु के रुमन (पेट) की पी.एच. बदल जाती है और वो क्षारकता की चपेट में आ जाते है। इससे एल्कोलोसिस रोग भी कहते है। कभी–कभी तो क्षारकता इतनी अधिक बढ़ जाती है कि उपचार के अभाव में 2–3 घंटे के भीतर ही पशु की मृत्यु हो जाती है। जुगाली करने वाले पशु इस तरह का खाना जिसमें प्रोटीन की मात्रा ज्यादा हो, को खाने के आदि नहीं होते है अतः वे शीघ्र ही इससे प्रभावित हो जाते है। अधिक प्रोटीन युक्त भोजन पशु के शरीर में अमोनिया गैस के उत्पादन को बढ़ा देता है जिससे पेट फूलना या आफरा की समस्या भी हो जाती है।

क्षारकता की स्थिति में पशुओं में निम्न लक्षण प्रकट होते है:-

- ❖ प्रभावित पशु का पेट अचानक से फूल जाता है। पेट फूलने का मुख्य कारण बुलबुलेदार गैस का बनना होता है।
- ❖ अधिकतर पशु जमीन पर लेट जाते है एवं मुंह से झाग निकलने लगते है।
- ❖ पशु को सांस लेने में तकलीफ होती है।
- ❖ कभी–कभी गोबर में बिना पचे हुए खाने के टुकडे निकलते है।
- ❖ बेचैनी के कारण प्रभावित पशु फड़फड़ाता है।
- ❖ यदि प्रभावित पशु इसी स्थिति में काफी देर तक पड़ा रहे एवं चिकित्सा सुविधा समय पर उपलब्ध ना हो तो पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

यदि पशुपालक शादी–विवाह, समारोह का बचा हुआ दूषित भोजन पशु को खिलाता है तो उसका निदान तुरन्त किया जा सकता है परन्तु यदि पशु आवारा हो या बाहर चरने के लिए जाता है तो वो बाहर का सड़ा–गला दूषित आहार खा लेता है तो उसका निदान लक्षणों से किया जा सकता है। उसके लिए पशुचिकित्सक को तुरन्त दिखाकर पशु के पेट में सुई के द्वारा तरल पदार्थ निकाला जाता है जिससे पशु के पेट की गैस बाहर निकल जाती है। उस तरल पदार्थ की पी.एच लगभग जांचने पर पी.एच. का मान 8–9 तक आता है अंतः लक्षण प्रकट होने पर तुरन्त पशुचिकित्सक से परामर्श कर उचित इलाज करावें।

उपचार :-

- ❖ प्रभावित पशु को 5% डी.एन.एस 3–4 लीटर I/V विधि से देवें।
- ❖ नींबू के रस के अलावा 5% ग्लेशियल एसिटिक एसिड का घोल भी पशु को पिलाया जा सकता है। इसके लिए 250 मिली. पानी में सिरका मिलाकर पशु को दिन में एक बार पिलाना चाहिए।
- ❖ प्रभावित पशु को पाचक पाउडर 15–15 ग्राम सुबह–शाम देवें।

बचाव :-

पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि शादी–समारोहों का अथवा घर का बचा हुआ दूषित भोजन पशुओं को ना खिलाएं, पशुओं को संतुलित आहार देवें तथा खनिज लवण मिश्रण भी पशुओं को समय–समय पर देवें। पशुओं को उच्च प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ देने से भी बचे।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–नवम्बर, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लेक क्वाटर (बी.क्यु.)	–	–	–	–	दौसा, धोलपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, नागौर
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अजमेर, अलवर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, चूरू, जयपुर, झुंझुनू, जैसलमेर, जालोर, जोधपुर, नागौर, पाली
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	टोंक	–	–	बीकानेर
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	–	–	उदयपुर	अलवर, बांसवाड़ा, बारां, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, धोलपुर, डूंगरपुर, जयपुर, झालावाड़, झुंझुनू, नागौर, पाली, राजसमन्द, सीकर, टोंक, सिरोही
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस			जयपुर	बाड़मेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, पाली, उदयपुर, हनुमानगढ़
पी.पी.आर.	बकरी	उदयपुर	चूरू	–	बाड़मेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, पाली, उदयपुर, हनुमानगढ़
थीलेरियोसिस	गाय, भैंस	उदयपुर	–	–	–
ट्रीपेनोसोमियोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	बीकानेर	–	–	
लम्पी स्किन डिजीज	गाय, भैंस	–	–	जयपुर, भरतपुर, धौलपुर, दौसा, सिरोही, कोटा, बारां, भीलवाड़ा, चितौड़गढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, करोली, बूंटी, टोंक, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर	गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जोधपुर, जालोर, चूरू, जैसलमेर, पाली, बाड़मेर, नागौर, सीकर, झुंझुनू, पाली
बर्ड फ्लू	प्रवासी पक्षी			जोधपुर, पाली, जयपुर	–

गायों व भैंसों में औलांश की समस्या एवं निवारण

पशुओं में मादा जनन तंत्र के आंतरिक एवं बाह्य भागों का योनि द्वार द्वारा बाहर झांकना ही औलांश/प्रोलेप्स कहलाता है। अलग–अलग भागों में यह शरीर दिखाना, फूल दिखाना, कांटा दिखाना आदि के नाम से भी जाना जाता है। पशुओं में यह समस्या प्रायः गायों एवं भैंसों में देखी जाती है। औलांश की समस्या गर्भस्थ एवं अगर्भस्थ पशुओं में देखी जा सकती है। यह समस्त पशुओं में प्रसव से पूर्व एवं तुरंत पश्चात देखने को मिल सकती है जो पशु प्रबंधन को प्रजनन एवं आर्थिक प्रबंधन को चुनौतीपूर्ण बनाती हैं।

औलांश की समस्या के लिए प्रमुख रूप से कूप्रबंधन के साथ–साथ अन्य निम्नलिखित कारण भी इसके लिए जिम्मेवार हो सकते हैं :–

- **कुप्रबंधनः**– पशु प्रबंधन में आवास, खान–पान एवं साफ–सफाई आदि सभी अहम पहलू है। गाय एवं भैंस को उनकी शारीरिक अवस्था, उत्पादन क्षमता एवं प्रजनन स्तर के आधार पर संतुलित आहार दिया जाना अति आवश्यक है। वृहद रूप से आवश्यक खनिज लवण जैसे कैल्शियम, फॉस्फोरस एवं विटामिन आदि की लंबे समय तक शरीर में कमी से पशु इस समस्या हेतु अति संवेदनशील हो जाता है। गंदे आवास एवं पर्याप्त साफ–सफाई के अभाव में पशु के बैठने के बाद बाह्य जननांगों पर धूल, गोबर, भूसा आदि लग जाने से जलन होती है फलस्वरूप पशुओं में औलांश की समस्या देखी जा सकती है।
- **वृद्धावस्थाः**– वृद्ध पशुओं में मांसपेशियां कमजोर होने के कारण बाह्य जननांग औलांश के रूप में देखे जा सकते हैं।
- **अंडाशय पर गांठ होने के कारणः**– अंडाशय पर बनने वाली पुटिका में अंडोत्सर्ग नहीं होने के कारण पुटिका का ही आकार बढ़ता जाता है जिससे एस्ट्रोजन हार्मोन का स्त्राव अधिक होने लगता है फलस्वरूप बाह्य जननांगों के औलांश की समस्या देखी जा सकती है।
- **एस्ट्रोजेनिक आहारः**– कई ऐसे आहार जैसे रिजका, मूंगफली का चारा, ग्वार का भूसा आदि के सेवन से पशु के शरीर में एस्ट्रोजन का स्तर सामान्य से बढ़ता है जिससे औलांश की समस्या देखी जा सकती है।
- कई बार पशुपालक पशुओं के मद में लाने हेतु एवं मद समकालीनता के लिए एस्ट्रोजन हार्मोन का उपयोग करते हैं जिस कारण से भी शरीर में इस हार्मोन की अधिकता होने से औलांश की समस्या हो सकती है।
- प्रसव के दौरान जेर/अपरा के अटकने के कारण पशु अधिक जोर लगाता है जिस कारण गर्भाशय का औलांश होने की समस्या देखी जा सकती है।
- अत्यधिक मोटे पशुओं में भी प्रायः यह जननांगों के औलांश की समस्या अक्सर देखी जा सकती है।
- भैंसों में प्रायः अत्यधिक गर्मी से तनाव के कारण भी जननांगों का औलांश देखा जा सकता है।

- मादा पशु में पेशाब की समस्या होने पर भी औलांश दिखाई दे सकता है।

औलांश की समस्या का प्रबंधन :–

- गाय–भैंस में इस समस्या की सावधानी एवं बचाव के लिए विशेष रूप से पशुओं के प्रबंधन में सुधार जरूरी है। पशु आहार के सभी घटकों में हरे चारे की प्रचुरता निहायत ही जरूरी है। आवश्यक प्रमुख खनिज लवण जैसे कैल्शियम एवं फॉस्फोरस की मात्रा पशु आहार में सुनिश्चित कर लेनी चाहिए। प्रभावित पशुओं के आहार में प्रतिदिन 40 से 50 ग्राम कैल्शियम पाउडर देने से इस समस्या से निजात मिल सकती है। बाजार निर्मित विटामिन एवं खनिज लवण मिश्रण के सप्लीमेंट्स आदि भी उपचार के तौर पर दिए जा सकते हैं।
- पशुपालक अपने पशु में यदि ताव के लक्षणों की अधिक तीव्रता, लंबा मद, दूध उत्पादन में कमी, पूंछ के आधार पर कूबड़ का निर्माण आदि लक्षण अंडाशय के उपर गांठ की समस्या को इंगित करते हैं अतः पशुपालक अपने नजदीकी पशुचिकित्सक से संपर्क कर उसका उपचार करवाना चाहिए। पशुपालकों को अपने पशुओं को लम्बे समय तक एस्ट्रोजेनिक फीड देने से अंडाशय पर गांठ की समस्या हो सकती है अतः यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि वे ऐसे फीड लम्बे समय तक न दें।
- पशुपालक अपने पशुओं के शरीर एवं इसके बाड़ों में साफ–सफाई का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए। मादा पशुओ के बाह्य जननांग दैनिक तौर पर दो से तीन बार साफ पानी से धोने से जननांगों में संक्रमण एवं औलांश की समस्या की संभावना काफी हद तक कम जो जाती है।
- अधिक गर्मी में पशुओं को दो से तीन बार नहलाने से तनाव कम होता है जिससे औलांश की समस्या की संभावना भी कम हो जाती है।

औलांश की समस्या को पशु प्रबंधन से संबंधित पहलुओं जैसे आवास, पौषण, साफ–सफाई, व्यायाम आदि में सुधार करके इस समस्या के होने की संभावना को कम किया जा सकता है।

डॉ. अमित कुमार एवं डॉ. कुसुमलता झाझड़िया
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सेक्स सॉर्टेड सीमन : अब सिर्फ बछड़ियां पैदा होगी

समय के साथ खेती तथा यातायात में मशीनीकरण बढ़ने से इन क्षेत्रों में पशुओं विशेषतः नर पशुओं की उपयोगिता घट गयी है तथा धार्मिक संवेदनाओं के कारण हमारे देश में गौवंश का उपयोग मांस उत्पादन में भी नहीं किया जा सकता है। कम उपयोगिता के कारण किसान/पशुपालक नर गौवंश को कम उम्र में ही आवारा छोड़ देते है जिसके कारण विगत कुछ वर्षों में आवारा पशुओं की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। चूँकि सेक्स सॉर्टेड वीर्य के उपयोग से लगभग 90% ब्यांत में मादा पशु (बछरी) का जन्म होता है, सेक्स सॉर्टेड वीर्य का कृत्रिम गर्भाधान में उपयोग से आवारा पशुओं की बढ़ती संख्या को नियंत्रित करने में एक क्रान्तिकारी कदम साबित होगा तथा पशुपालकों को उच्च उत्पादन एवं उच्च आनुवंशिक गुणवत्ता वाले मादा पशु की प्राप्ति होगी।

क्या है सेक्स सार्टेड वीर्य :

सेक्स सॉर्टेड वीर्य ऐसा वीर्य होता है जिसका उपयोग कृत्रिम गर्भाधान में करने से 90% ब्यांत में गर्भस्त पशु बछरी (फीमेल काफ) को जन्म देती है। इस वीर्य के उत्पादन के लिए सेक्स्ड सीमन टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाता है। सेक्स्ड सीमेन तकनीक एक्स (X) शुक्राणुओं को वाई (Y) शुक्राणुओं से अलग करके पैदा होने वाली संतानों के लिंग के चयन से सम्बंधित है। इसका उद्देश्य नर बछड़ों से मुक्ति दिलाना तथा यह सुनिश्चित करना कि गायों का केवल एक्स–गुणसूत्र वाले शुक्राणुओं वाले वीर्य से गर्भधारण किया जाये।

उत्पादन :

X गुणसूत्रों और Y गुणसूत्रों वाले शुक्राणुओं के बीच डी–ऑक्सीराइबो न्यूक्लिक एसिड (डीएनए) की मात्रा में अंतर के आधार पर X गुणसूत्रों वाले शुक्राणुओं को Y गुणसूत्रों वाले शुक्राणुओं से अलग किया जाता है। गायों या भैंस की नस्ल में X गुणसूत्रों में डीएनए की मात्रा Y गुणसूत्रों की डीएनए से 3.6% से 4.2% तक अधिक होती है। इसके लिए फ्लोसाईटोमेटरी तकनीक का उपयोग किया जाता है। इस परिक्रिया में शुक्राणु कोशिकाओं को एक फ्लोरोसेंट डाई के साथ अभिरंजित किया जाता है तथा ये डाई शुक्राणु कोशिकाओं के डीएनए के साथ चिपक जाती है। अभिरंजित कोशिकाओं को एक मशीन (फ्लो साइटोमीटर) से लेजर बीम से गुजारा जाता है जो शुक्राणुओं को उनके द्वारा दी जाने वाली फ्लोरोसेंट रोशनी की मात्रा के आधार पर अलग कर सकता है। चूंकि एक्स गुणसूत्र वाले शुक्राणुओं में अधिक डीएनए होता है, इसलिए ये कोशिकाएं अधिक डाई को अवशोषित करती हैं और अधिक प्रकाश उत्सर्जित करती हैं। इसी आधार पर वीर्य में X और Y शुक्राणुओ को अलग–अलग किया जाता है।

केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम योजना के तहत पशुपालको को रियायती दर पर सेक्स सॉर्टेड वीर्य उपलब्ध कराने हेतु सब्सिडी देने की घोषणा की है। वर्तमान में 4 सरकारी (गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड) एवं विभिन्न गैरसरकारी प्रयोगशाला में विदेशी (होलिस्टिन फ्रिजियन, जर्सी) तथा देशी (साहीवाल, गिर, थारपारकर एवं रेड सिन्धी) गौवंश नस्लों के सेक्स सॉर्टेड वीर्य का उत्पादन किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत अगले पांच वर्षों में 51 लाख गर्भाधान करवाये जायेंगे और सुनिश्चित गर्भाधान पर पशुपालकों को 750 रूपये की सब्सिडी अथवा सेक्स सॉर्टेड वीर्य की लागत का 50% उपलब्ध करवाया जायेगा।

डॉ. देवेन्द्र चौधरी, डॉ. चांदनी जावा एवं डॉ. रेखा लोहिया
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

सिरोही बकरी पालन कर सिकंदर हुआ निहाल

भारत में पशुपालन व्यवसाय सदियों से किया जा रहा है, ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन आय का एक प्रमुख साधन है, इसी कड़ी में बकरी पालन एक बहुत लोकप्रिय पशुपालन है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी बकरी को गरीब की गाय कहा करते थे। आज के परिवेश में भी यक कथन बहुत महत्वपूर्ण है। आज जब एक और पशुओं का दाना चारा एवं दवाईयां महंगी साबित होने से पशुपालन आर्थिक दृष्टी से कम लाभकारी साबित हो रहा है वही दूसरी ओर बकरीपालन कम लागत एवं सामान्य देखरेख में गरीब किसानों एवं खेतिहर मजदूरों की जीविकोपार्जन का एक महत्वपूर्ण साधन बन रहा है। ऐसे ही नागौर जिले के लाड़नू तहसील के दुजार गांव के मोहम्मद सिकंदर की जो की एक खेतिहर किसान है, जिन्होनें बकरीपालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया। सिकंदर 50 सिरोही नस्ल की बकरी एवं एक बकरे के साथ आज से लगभग एक वर्ष पूर्व अपना बकरीपालन व्यवसाय आरम्भ किया। तत्पश्चात पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) से सम्पर्क कर बकरी फार्म में बकरियों के रख–रखाव एवं खानपान की जानकारी के साथ–साथ बकरियों के आवास, संतुलित आहार प्रबंधन, ग्याभिन पशुओं के आहार प्रबंधन, ब्रीडर बकरों एवं मेमनों के आहार प्रबंधन के साथ–साथ बकरियों की समुचित वृद्वि हेतु नियमित समय अंतराल पर कृमिनाशक दवा का उपयोग, बकरियों में विभिन्न रोगों हेतु टीकाकरण, खनिज मिश्रण का महत्व आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर उसे अपनाया जिससे उनकी सभी बकरियां स्वस्थ है। वर्तमान में इनके पास 145 बकरियां है। 20 बकरों को उन्होनें छः से आठ साल की उम्र में लगभग डेढ लाख रू. में बेच दिये। सिकंदर बकरी पालन के इस व्यवसाय से कम समय में मिले अधिक लाभ से सतुंष्ट और बहुत खुश है एवं इनकी आर्थिक स्थिति भी काफी सुधर गई है। सिकदंर नियमित तौर पर पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया से सम्पर्क कर उचित जानकारी लेते रहते है। सिकंदर गांव के दूसरे लोगों को भी बकरीपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते रहते है, ताकि वे भी कम समय में थोड़ा निवेश कर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सके। सिकंदर का कहना है कि जो लोग बड़े पैमाने पर बकरी पालन करते है वो इससे अच्छा मुनाफा कमा पाते है चूंकि बकरे का मांस और बकरी के दूध की मांग बाजार में हमेशा रहती है ऐसे में बकरीपालन आमतौर पर घाटे का व्यवसाय नहीं है।

सम्पर्क : मो. सिकंदर खान, गांव–दुजार, जिला नागौर
(मो. 6571736595)

निदेशक की कलम से...

पशुओं के लिए अधिक उपयोगी है बरसीम का हरा चारा

राजस्थान प्रदेश में किसान की आजीविका में पशुधन का विशेष महत्व है, यहां की विषम परिस्थितियों में पशुधन ही पशुपालक का एक मात्र सहारा है। पशुपालन क्षेत्र में अधिक आय अर्जित करने के लिए पशुओं का स्वस्थ रहना अति–आवश्यक है। पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार आवश्यक है, इससे पशुओं की दूध उत्पादन क्षमता भी बढ़ती है। अतः पशुओं के आहार में हरे चारे का बड़ा महत्व है यदि पशुओं को हरा चारा मिलता रहे तो पशुओं का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है तथा दाने की मात्रा भी कम खर्च होगी। पशुपालक भाई खरीफ के मौसम में हरे चारे में ज्वार, मक्का, बाजरा व लोबिया तथा रबी के मौसम में बरसीम, जई व लुर्सन की बुआई करते है। रबी में बोई जाने वाली दलहनी चारा फसलों में बरसीम का प्रमुख स्थान है। यह पशुओं के लिये पौष्टिक हरा चारा प्रदान करने के साथ–साथ भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढाती है। बरसीम से नवम्बर के अन्त से अप्रेल तक लगभग 1000–1200 क्विंटल हरा चारा प्रति हैक्टेयर प्राप्त होता है। इसे हरे चारे का राजा भी कहते हैं। सर्दियों में हरे चारे के रूप में बरसीम एक महत्वपूर्ण हरा चारा है यह शीतोष्ण क्षैत्र में उगाई जाने वाली हरे चारे की मुख्य दलहनी फसल है जो कि पशु आहार की दृष्टि से बहुत ही गुणकारी होती है इसमें 17–19 प्रतिशत प्रोटीन, 1.90–2.00 प्रतिशत कैल्शियम तथा 0.28 प्रतिशत फॉस्फोरस होता है। पोषक तत्वों के अलावा इसमें पाचकशीलता (70 प्रतिशत) होती है। बरसीम की एक विशेषता यह भी है कि इस फसल की कई बार कटाईयां की जा सकती है तथा नवम्बर से मई माह तक हरा चारा उपलब्ध रहता है। बरसीम से नवम्बर के अन्त से अप्रेल तक पांच कटाई प्राप्त की जा सकती है। प्रथम कटाई बुवाई के 50 से 55 दिनों के बाद करें एवं शेष कटाईयां 30–35 दिन के अंतराल पर करें। बरसीम से अगर बीज उत्पादन लेना हो तो मार्च के बाद कटाई बंद कर दें। मई तक बीज पककर तैयार हो जाते हैं। बरसीम से 800–1200 क्विंटल हरा चारा प्रति हैक्टेयर प्राप्त होता है। अगर फरवरी के बाद फसल बीज के लिये छोड़ दे तो 300–400 किलो बीज तथा 500–600 क्विंटल हरा चारा प्रति हैक्टेयर प्राप्त होता है। अतः पशुपालक व किसान भाइयों को हरे चारे के रूप में बरसीम की उचित किस्म का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक विधि से पैदावार करनी चाहिए तथा उचित मात्रा में पशुओं को खिलाना चाहिए।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया